शहीद दिवस पर भाषण हिंदी में | **Shahid Diwas Speech in Hindi**

शहीद दिवस उन स्वतंत्रता सेनानियों के सम्मान में मनाया जाता है जिन्होंने देश की सेवा में अपने प्राणों की आहूति दी है। हम आपको बता दें कि पूरे साल में सात अलग-अलग दिनों में, शहीद दिवस मनाया जाता है, यानी 30 जनवरी, 23 मार्च, 19 मई, 21 अक्टूबर, 17 नवंबर, 19 नवंबर और 24 नवंबर। 30 जनवरी को महात्मा गांधी को सम्मान देने के लिए शहीद दिवस मनाया जाता है। शहीद दिवस, जिसे Martyrs Day के रूप में भी जाना जाता है भारत में मुख्य तौर पर दो तिथियों पर मनाया जाता है। 23 मार्च को अंग्रेजों ने तीन बहादुर स्वतंत्रता सेनानियों, भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर को फांसी दे दी थी।

महात्मा गांधी की मृत्यु, 30 जनवरी को शहीद दिवस के रूप में भी जाना जाता है। हम आपको शहीद दिवस के बारे में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य बता रहा हैं जो सभी को पता होने चाहिए।शहीद दिवस प्रतिबिंब और स्मरण का दिन है, लेकिन यह कार्रवाई करने का दिन भी है। यह उन लोगों की स्मृति का सम्मान करने का दिन है, जिन्होंने देश के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। यह याद रखने का दिन है कि हम सभी में बदलाव लाने की शक्ति है और हम जिस चीज में विश्वास करते हैं उसके लिए खड़े होकर और एक बेहतर दुनिया के लिए काम करके, हम अपने और अपने आसपास के लोगों के लिए एक उज्जवल भविष्य बना सकते हैं।

गौरतलब है कि सन 1924 में कानपुर में भगत सिंह सचिंद्रनाथ सान्याल द्वारा शुरू किए गए हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) में शामिल हो गए थे। एचआरए का मानना था कि सशस्त्र क्रांति ब्रिटिश साम्राज्यवाद से लड़ने का एकमात्र तरीका है। 1930 में जब चंद्रशेखर आज़ाद ने अंग्रेजों से लड़ते हुए खुद को गोली मार ली, तो हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन (HSRA) का पतन हो गया, जिसे पहले HRA के नाम से जाना जाता था।वर्ष 1927 में उन्हें काकोरी ट्रेन डकैती मामले के संबंध में गिरफ्तार किया गया था, जिसमें 9 अगस्त 1925 को HRA स्वतंत्रता सेनानियों ने काकोरी के पास 8 नंबर डाउन ट्रेन को लूट लिया था। काकोरी ट्रेन डकैती की योजना बलपूर्वक ब्रिटिश प्रशासन से हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के लिए धन जुटाने की थी।

वहीं सन 1928 में लाला लाजपत राय लाहौर में साइमन कमीशन के खिलाफ एक मौन विरोध का नेतृत्व कर रहे थे, जब पुलिस अधीक्षक जेम्स स्कॉट ने प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज का आदेश दिया था, जिसके चलते लाला लाजपत राय गंभीर रूप से घायल हो गए थे और एक सप्ताह बाद उनकी मृत्यु हो गई। लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए भगत सिंह और उनके साथियों ने जेम्स स्कॉट को मारने का फैसला किया लेकिन गलती से उन्होंने जॉन सॉन्डर्स को गोली मार दी। सन 8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह ने बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर दिल्ली में केंद्रीय विधान सभा के अंदर दो विस्फोटक बम फेंके थे।

भगत सिंह ने 'द डेफ हियर' बनाने के उद्देश्य से सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली में दो बम फेंके थे। उनका उद्देश्य किसी को मारना या घायल करना नहीं था जैसा कि बाद में उनके द्वारा बताया गया था। भगत सिंह और दत्त ने वहां से भागने की कोशिश नहीं की बल्कि उन्होंने "इंकलाब जिंदाबाद-इंकलाब जिंदाबाद-इंकलाब जिंदाबाद" का नारा लगाया। जिसके बाद भगत सिंह और बीके दत्त को गिरफ्तार कर लिया गया और जून में उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई, जिसमें दोषियों को दूर स्थानों पर भेज दिया गया था । बाद में शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर के साथ भगत सिंह पर लाहौर षडयंत्र मामले (ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जेपी सौंडर्स की हत्या का मामला) के लिए मुकदमा चलाया गया था।

भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को लाहौर षड्यंत्र मामले में मौत की सजा सुनाई गई और 24 मार्च 1931 को फांसी देने का आदेश दिया गया, लेकिन उन्हें 23 मार्च को शाम 7:30 बजे फांसी दे दी गई।भारत 23 मार्च को शहीद दिवस के रूप में उन युवा स्वतंत्रता सेनानियों की याद में मनाता है, जो अपने चेहरे पर मुस्कान के साथ फांसी के फंदे पर चढ़ गए और मातृभूमि के लिए अपने प्राणों को खुशी खुशी न्योछावर कर गएं।

ब्रिटिश सरकार भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी देने से डर रही थी इसलिए ब्रिटिश संसद ने एक विशेष संसदीय सत्र बुलाकर चर्चा की, क्या भगत सिंह को माफ़ किया जा सकता है और उनकी फांसी को रोका जा सकता है?ब्रिटिश सरकार द्वारा एक विशेष संसदीय सत्र बुलाने का कारण स्थानीय खुफिया इकाई (एलआईयू) की रिपोर्ट थी, जिसमें कहा गया था कि अगर भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दी जाएगी तो पूरा भारत ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विद्रोह कर देगा, जिसके चलते उनके लिए भारत पर शासन करना कठिन होगा। सन 1931 में जब गांधी जी और वायसराय इरविन की लंदन में बैठक हुई, तो इरविन ने गांधी जी से कहा कि वे भगत सिंह को माफ कर सकते हैं और उनकी फांसी को इस शर्त पर रोक सकते हैं कि भगत सिंह अपने हस्ताक्षर से ब्रिटिश सरकार को माफी मांगने वाला पत्र लिखें।

गांधी जी ने लाहौर जेल में भगत सिंह को यह संदेश दिया और इसके जवाब में भगत सिंह कहते हैं, मैं अंग्रेजों की कोई शर्त नहीं मानता क्योंकि मैंने कुछ भी गलत नहीं किया है।ब्रिटिश सरकार को पता था कि अगर उन्होंने भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दे दी तो पूरा भारत ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विद्रोह कर देगा और उनके लिए भारत पर शासन करना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए ब्रिटिश सरकार ने भारत में विद्रोह से बचने के लिए निर्धारित समय से एक दिन पहले क्रांतिकारियों को फांसी देने का फैसला किया।

जय हिन्द